उत्साह, अट नहीं रही है

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रदत्त कार्य-1 : काव्य रचनाओं की सूची तैयार कर, उनकी तीन मुक्त छंद की कविताएँ।

विषय : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।

उद्देश्य :

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय देना।
- 'निराला' साहित्य की विशेषताएँ बताना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- लेखन क्षमता को समृद्ध करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और उनका साहित्य इस विषय में छात्रों को जानकारी देंगे।
2. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
3. छात्र निराला का जीवन परिचय देते उनकी तीन मुक्त छंद की कविताएँ लिख कर लाएँगे।
4. निर्धारित कालांश में छात्र अपने कार्य की प्रस्तुति करते हुए कविता पाठ भी करेंगे।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखें जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : कवि का संक्षिप्त परिचय एवं उनकी एक-एक कविता ।

विषय : छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भों के नाम लिखें।

उद्देश्य :

- शब्द संपदा में वृद्धि करना।
- सुर, ताल, लय सम्बन्धी विशेषताओं का विकास करना।
- श्रवण से जुड़ी हुई दक्षताओं का विकास करना।
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में छायावाद एवं उसके प्रमुख चार स्तम्भों की जानकारी देगा।
2. यह सामूहिक कार्य होगा।
3. चार समूह बनाए जाएँगे। प्रत्येक समूह एक कवि पर जानकारी एकत्र करेगा।
4. निर्धारित कालांश में समूह अपनी प्रस्तुति कक्षा में करेगा।
5. छात्रों को इसकी सूचना 2-3 दिन पूर्व की जाएगी।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखें जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक समूह का कार्य कक्षा के प्रदर्शन श्यामपट्ट पर प्रदर्शित किया जाए और उनकी सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : स्वरचित कविता लेखन।

विषय : 'वर्षा का एक दिन'

उद्देश्य :

- प्राकृतिक सौन्दर्य बोध कराना।
- ऋतुओं की विविधता का ज्ञान कराना।
- ऋतु सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी देना।
- कल्पनाशीलता का विकास कराना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगतकार्य है – सर्वप्रथम अध्यापक छात्रों को समझाएगा और संकेत श्यामपट्ट पर लिखेगा।

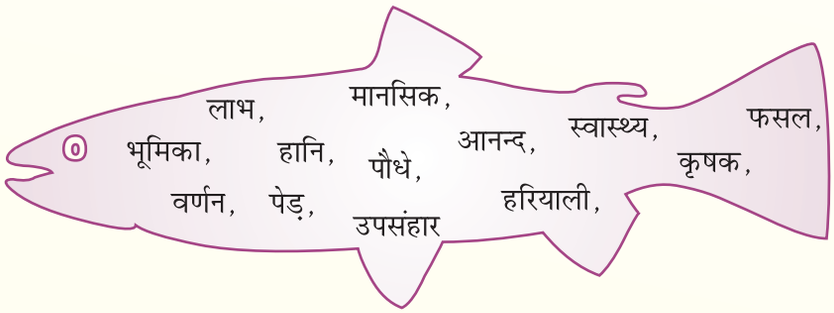

2. अध्यापक निरीक्षण करेंगे कि छात्र सही ढंग से लिख रहे हैं अथवा नहीं।
3. जो छात्र नहीं लिख पा रहे हैं उन्हें सहयोग दिया जाएगा।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
5. मूल्यांकन शिक्षक अपनी सुविधानुसार कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- लेखन कौशल
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा उनका मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- चार पांच अच्छी कविताओं को कक्षा में पढ़ा जाए।
- कार्य न करने वाले छात्रों का उत्साह वर्धन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : 'संदेश भेजने के माध्यम' - प्राचीन एवं वर्तमान काल के संदर्भ में

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- संदेश एवं संदेश वाहक के महत्व का ज्ञान कराना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- श्रवण कौशल की क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
2. अध्यापक विषय को समझाते हुए संदेश भेजने के प्राचीन एवं वर्तमान तरीकों पर प्रकाश डालेगा।
3. कक्षा को दो भागों में विभक्त किया जाएगा।
4. एक समूह प्राचीन काल के संदेश वाहकों एवं संदेश भेजने के तरीकों पर चर्चा करेगा तथा दूसरा समूह वर्तमान काल के।
5. शिक्षक यह भी स्पष्ट कर दें कि संदेश के तरीकों में क्या खामियाँ तथा क्या अच्छाईयाँ थी इस पर भी विद्यार्थी चर्चा करें तथा उदाहरण सहित तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट करें।
6. सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अनिवार्य है।

7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

8. प्रत्येक समूह को परिचर्या के लिए 15–15 मिनट का समय दिया जाएगा।

9. जब एक समूह परिचर्चा करेगा उस समय दूसरा समूह ध्यानपूर्वक सुनेगा एवं शिक्षक अवलोकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय सुसंबद्धता
- तार्किकता
- उपयुक्त उदाहरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी सूचना, तर्क एवं जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- सभी विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : संकलन, लेखन तथा वाचन।

विषय : प्रकृति से संबंधित कविताएँ।

उद्देश्य :

- सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- प्रकृति के प्रति सचेत करना।
- वाचन दक्षता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

2. अध्यापक सर्वप्रथम प्रकृति से संबंधित कुछ कविताओं का परिचय दे दें।

3. यह कार्य गतिविधि से दो दिन पूर्व दिया जाएगा।

4. छात्रों को स्वयं कविता रचना की प्रेरणा दी जा सकती है।

5. मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।

6. गतिविधि के समय प्रत्येक छात्र एक-एक करके कविता पाठ करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, लय)
- कविता का चयन / स्वरचित
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- जो छात्र स्वरचित कविता पाठ करें उनकी सराहना की जाए तथा अन्य छात्रों को भी इसकी ओर प्रेरित किया जाए।
- जो छात्र ठीक से वाचन नहीं कर पाए उनकी इस कार्य में मदद की जाए।